अध्याय 10: भक्तिन

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 10 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1	पाठ के साथ	6 प्रश्न
प्रश्नावली 10.2	पाठ के आसपास	1 प्रश्न
प्रश्नावली 10.3	भाषा की बात	3 प्रश्न

प्रश्नावली 10.1 — पाठ के साथ

प्रश्न 1

भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

हल

भक्तिन का वास्तविक नाम 'लछमिन' (लक्ष्मी) था। वह इस नाम को इसलिए छुपाती थी क्योंकि उसका नाम और उसका जीवन परस्पर विरोधाभासी थे।

लक्ष्मी समृद्धि की देवी हैं, किंतु भक्तिन का जीवन दरिद्रता, दुख और संघर्ष से भरा था। जैसा लेखिका कहती है — 'लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी।'

इस नाम का विरोधाभास उसे अपमानजनक लगता था। इसीलिए वह अपना नाम किसी को नहीं बताती थी — केवल नौकरी माँगते समय ईमानदारी से बताया, पर यह अनुरोध किया कि लेखिका इस नाम का प्रयोग न करें।

भक्तिन नाम महादेवी वर्मा ने दिया। जब उन्होंने उसके गले में कंठी माला देखी तो उसका नया नामकरण 'भक्तिन' किया।

यह नाम इसलिए उचित था क्योंकि भक्तिन की जीवनशैली में वैराग्य और भक्ति के लक्षण थे — वह कंठी माला पहनती थी, नियमित पूजा-पाठ करती थी और सांसारिक मोह से ऊपर उठी हुई दिखती थी।

भक्तिन नाम ने उसे अपनी समृद्धि-सूचक नाम की दुखद विरोधाभासी स्मृति से मुक्त किया और उसे अपनी वास्तविक पहचान दी।

उत्तर: भक्तिन अपना नाम 'लछमिन' (लक्ष्मी) इसलिए छुपाती थी क्योंकि समृद्धिसूचक यह नाम उसके दरिद्र जीवन से विरोधाभासी था। 'भक्तिन' नाम महादेवी वर्मा ने उसकी कंठी माला और भक्ति-भाव देखकर दिया।

प्रश्न 2

दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?

हल

भक्तिन की जिठानियों ने उसे इसलिए प्रताड़ित किया क्योंकि भक्तिन ने केवल कन्याओं को जन्म दिया था — पुत्र नहीं। पुत्र-महिमा में अंधी ये जिठानियाँ स्वयं 'काक-भुशंडी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि' कर चुकी थीं।

इस घटना से यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। किंतु यह धारणा सही नहीं है।

जिठानियों का यह व्यवहार उनकी व्यक्तिगत क्रूरता से अधिक उस पितृसत्तात्मक समाज की देन है जिसमें वे स्वयं

पली-बढ़ी थीं। पुत्र को श्रेष्ठ और पुत्री को बोझ मानने की सोच समाज ने उनमें भरी थी।
वे वास्तव में उस व्यवस्था का शिकार थीं और उसी व्यवस्था को आगे बढ़ा रही थीं — वे इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था की पीड़ित भी थीं और उपकरण भी।
इसलिए 'स्त्री ही स्त्री की दुश्मन' की धारणा अधूरी और भ्रामक है। असली दुश्मन वह पितृसत्तात्मक सोच है जो स्त्रियों को एक-दूसरे की प्रतिद्वंद्वी बना देती है।
महादेवी वर्मा का यह रेखाचित्र इसी व्यवस्था पर सूक्ष्म प्रहार करता है।

उत्तर: इस धारणा से पूर्ण सहमति उचित नहीं है। जिठानियों का दुर्व्यवहार उनकी व्यक्तिगत क्रूरता से नहीं, पितृसत्तात्मक समाज की उस सोच से उपजा था जो पुत्री को हीन मानती है। असली दुश्मन वह व्यवस्था है, स्त्री नहीं।

प्रश्न 3

भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

हल

भक्तिन की बेटी विधवा हो चुकी थी। जिठौतों ने अपने तीतरबाज साले को उसपर थोपने की कोशिश की — ताकि भक्तिन की संपत्ति उनके अधिकार में आ सके।
बेटी ने उस वर को नापसंद किया। लेकिन वर ने छलपूर्वक उसकी कोठरी में घुसकर द्वार बंद कर लिया और फिर पंचों को बुलाया।
जब पंचायत बैठी तो उसने यह नहीं देखा कि स्त्री की इच्छा क्या है; केवल यह फैसला दिया कि एक कोठरी से निकले हैं तो पति-पत्नी की तरह रहना ही 'कलियुग का परिमार्जन' है।
यह फैसला स्त्री के स्वयं-निर्णय के अधिकार को कुचलने का प्रत्यक्ष उदाहरण है — न उसकी इच्छा पूछी गई, न उसकी आपत्ति सुनी गई।
यह घटना एक व्यक्तिगत दुर्घटना नहीं बल्कि उस सदियों पुरानी परंपरा का प्रतिबिंब है जिसमें विवाह जैसे अत्यंत व्यक्तिगत निर्णय में स्त्री की राय अप्रासंगिक मानी जाती रही है।
पाँच वर्ष की आयु में भक्तिन का विवाह, बेटी की अस्वीकृति के बावजूद पंचायत का निर्णय — ये सब उसी परंपरा की कड़ियाँ हैं।
इस प्रकार यह प्रसंग स्त्री के विवाह-संबंधी मानवाधिकार के दमन की सामाजिक परंपरा का प्रतीक बन जाता है।

उत्तर: भक्तिन की बेटी की अस्वीकृति के बावजूद पंचायत ने उसपर वर थोपा — न इच्छा पूछी, न आपत्ति सुनी। यह घटना उस सदियों पुरानी परंपरा का प्रतीक है जो विवाह में स्त्री के स्वयं-निर्णय के अधिकार को अप्रासंगिक मानती है।

प्रश्न 4

भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं — लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

हल

लेखिका ने स्वीकार किया है कि भक्तिन में कुछ दुर्गुण हैं — वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती।
भक्तिन के दुर्गुणों में शामिल हैं: इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये भंडार-घर की मटकी में छुपाना, और किसी के टोकने पर शास्त्रार्थ की चुनौती देकर खुद को सही ठहराना।
वह यह भी सोचती है कि मालकिन को जो सच जानकर क्रोध आ सकता हो, उसे बदलकर बताना 'झूठ' नहीं बल्कि कर्तव्य है।
तो लेखिका सीधे 'अच्छी' नहीं कह सकती — क्योंकि यह नैतिक दृष्टि से ईमानदारी नहीं होगी।
लेकिन इसके साथ ही लेखिका यह भी जानती हैं कि ये 'दुर्गुण' भक्तिन की गहरी स्वामी-भक्ति, अपनत्व और सुरक्षा-भाव से जन्मे हैं — वह इन्हें अपना धर्म समझती है।
इसीलिए लेखिका ने एक जटिल, संतुलित चित्रण किया — न अतिरंजित प्रशंसा, न निंदा। यह महादेवी जी की ईमानदार और मार्मिक दृष्टि का परिचय है।

उत्तर: भक्तिन में पैसे छुपाना और आवश्यकता पड़ने पर असत्य बोलना जैसे दुर्गुण हैं, इसीलिए सीधे 'अच्छी' कहना कठिन है। किंतु ये दुर्गुण उसकी स्वामी-भक्ति और अपनत्व से उपजे हैं — लेखिका ने संतुलित, ईमानदार चित्रण किया है।

प्रश्न 5

भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

हल

लेखिका को स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता था, इसलिए उन्होंने भक्तिन को रोका।
भक्तिन ने अकुंठित भाव से उत्तर दिया — 'शास्त्र में लिखा है।'
जब लेखिका ने जिज्ञासावश पूछा — 'क्या लिखा है?' तो भक्तिन ने तुरंत जवाब दिया — 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध।'
यह कोई प्रामाणिक शास्त्र-वचन नहीं बल्कि लोकोक्ति है — भक्तिन ने उसे शास्त्र का सूत्र बताकर अपनी इच्छा को धार्मिक मान्यता दे दी।
लेखिका को इस 'रहस्यमय शास्त्र-सूत्र' का स्रोत जानना संभव नहीं था, इसलिए वे चुप रह गईं और भक्तिन का हर बृहस्पतिवार को चूड़ाकर्म होता रहा।
यह उदाहरण दर्शाता है कि भक्तिन व्यावहारिक बुद्धि में अत्यंत चतुर है — वह शास्त्र और लोक-विश्वास को अपनी सुविधा के अनुसार व्याख्यायित कर लेती है।

उत्तर: भक्तिन ने सिर मुँडाने की अपनी इच्छा को 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध' जैसी लोकोक्ति को 'शास्त्र-वचन' बताकर उचित ठहरा दिया। यह उसकी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता और शास्त्र को सुविधानुसार सुलझाने की चतुराई का सुंदर उदाहरण है।

प्रश्न 6

भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं?

हल

भक्तिन का स्वभाव था कि वह दूसरों को अपने मन के अनुसार बना लेना चाहती है, किंतु स्वयं किसी परिवर्तन को स्वीकार नहीं करती।

भक्तिन ने महादेवी को देहाती खान-पान से परिचित कराया — मकई का दलिया मट्ठे से, बाजरे के तिल लगाकर बने पुए, ज्वार के भुट्टे के दानों की खिचड़ी, सफेद महुए की लपसी।

लेखिका इन देहाती व्यंजनों को स्वादिष्ट मानने लगीं और क्रमशः देहाती जीवन-शैली की ओर झुकती गईं।

भक्तिन ने लेखिका को अपनी भाषा की दंतकथाएँ कंठस्थ करा दीं।

जीवन की सरलता के प्रति भक्तिन ने लेखिका को इतना जागरूक कर दिया कि वे अपनी असुविधाएँ छुपाने लगीं और सुविधाओं की चिंता भूल गईं।

दूसरी ओर भक्तिन स्वयं नहीं बदली — उसने साफ धोती पहनना नहीं सीखा, 'आँय' की जगह 'जी' कहना नहीं सीखा और शहर के रसगुल्ले को कभी स्वीकार नहीं किया।

इस प्रकार एकतरफा प्रभाव पड़ा — लेखिका देहाती होती गईं, भक्तिन शहरी नहीं हुई।

उत्तर: भक्तिन ने लेखिका को देहाती खान-पान (दलिया, पुए, लपसी) और सरल जीवन-दृष्टि का आदी बना दिया। परंतु स्वयं भक्तिन शहरी ढंग से नहीं बदली — एकतरफा प्रभाव से लेखिका अधिक देहाती हो गईं।

प्रश्नावली 10.2 — पाठ के आसपास

प्रश्न 1

आलो आँधारि की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में आप क्या समानता देखते हैं?

हल

बेबी हालदार 'आलो आँधारि' की लेखिका हैं जो स्वयं एक घरेलू सहायिका थीं और जिन्होंने अपनी जीवन-यात्रा को आत्मकथा में लिखा।
भक्तिन और बेबी हालदार दोनों समाज के हाशिए पर रहने वाली स्त्रियाँ हैं जिन्होंने जीवन में अनेक संघर्ष झेले।
दोनों ने कठिन परिस्थितियों में भी अपनी जिजीविषा और आत्मसम्मान को बनाए रखा — टूटीं नहीं।
दोनों के व्यक्तित्व में परिस्थितियों के बावजूद एक दृढ़ संकल्प, स्वाभिमान और अपने-अपने तरीके की बुद्धिमत्ता विद्यमान है।
दोनों सामाजिक दबावों, पितृसत्ता और शोषण का शिकार बनीं, फिर भी अपनी पहचान और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ती रहीं।
दोनों के जीवन-संघर्ष ने समाज की स्त्री-विरोधी व्यवस्थाओं को उजागर किया।
इस प्रकार दोनों संघर्षशील, स्वाभिमानी और जिजीविषापूर्ण स्त्री-व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती हैं।

उत्तर: बेबी हालदार और भक्तिन दोनों हाशिए की संघर्षशील स्त्रियाँ हैं जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपना स्वाभिमान और जिजीविषा बनाए रखी तथा पितृसत्तात्मक शोषण के बावजूद अपनी पहचान की लड़ाई लड़ी।

प्रश्नावली 10.3 — भाषा की बात

प्रश्न 1

नीचे दिए गए विशिष्ट भाषा-प्रयोगों के उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए और इनकी अर्थ-छवि स्पष्ट कीजिए — (क) पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले (ख) खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी (ग) अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण

हल

(क) 'पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले'
प्रसंग: भक्तिन ने पहले एक कन्या को जन्म दिया था; उसके बाद दो और कन्याओं को।
अर्थ-छवि: 'संस्करण' शब्द पुस्तक की प्रतियों के लिए प्रयुक्त होता है। यहाँ तीनों कन्याओं की एक जैसी दशा — उपेक्षा, दरिद्रता — को 'एक ही मूल का पुनर्मुद्रण' कहकर लेखिका ने व्यंग्यात्मक और मार्मिक अर्थ उत्पन्न किया है।
इस प्रयोग में पुस्तकीय भाषा का मानवीय जीवन पर अनुप्रयोग लेखिका की विशिष्ट भाषाई सर्जनात्मकता का परिचय देता है।

(ख) 'खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी'
प्रसंग: जिठानियाँ भक्तिन को इसलिए उपेक्षा से देखती थीं कि उसने केवल कन्याओं को जन्म दिया। वे भक्तिन को 'दोषपूर्ण' मानती थीं।
अर्थ-छवि: समाज में पुत्री को 'खोटा सिक्का' (अनुपयोगी) माना जाता था। टकसाल वह स्थान है जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं। इस रूपक में भक्तिन को ऐसी 'टकसाल' कहा गया है जो केवल खोटे सिक्के (कन्याएँ) ही ढालती है।
यह प्रयोग पुत्री-विरोधी सामाजिक मानसिकता पर तीखा व्यंग्य करता है।

(ग) 'अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण'
प्रसंग: जब भक्तिन अपने पिता की मृत्यु की खबर पाकर नैहर पहुँची, तो गाँव के लोग 'हाय लछमिन अब आई' कहते हुए मिले।
अर्थ-छवि: 'अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ' — लोगों की वे बुदबुदाती, अस्फुट आवाजें जो बार-बार सुनाई दे रही थीं (पिता की मृत्यु का संकेत)। 'स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ' — लोगों की सहानुभूतिभरी नजरें जो साफ बता रही थीं कि कुछ बड़ा अघट घट गया है।
यह प्रयोग शोक-संवेदना की उस मार्मिक परिस्थिति को अत्यंत सटीकता से व्यक्त करता है जब शब्द कम पड़ते हैं और आँखें बोलती हैं।

उत्तर: (क) तीनों कन्याओं की समान दुर्दशा को पुस्तक के 'संस्करण' कहकर व्यंग्यात्मक अर्थ; (ख) केवल कन्याओं को जन्म देने वाली पत्नी को 'खोटे सिक्कों की टकसाल' कहकर पुत्री-विरोधी मानसिकता पर व्यंग्य; (ग) पिता की मृत्यु पर लोगों की अस्पष्ट बुदबुदाहट और स्पष्ट सहानुभूति-दृष्टि का मार्मिक चित्रण।

प्रश्न 2

पाठ में आए लोकभाषा के इन संवादों को समझकर इन्हें खड़ी बोली हिंदी में ढाल कर प्रस्तुत कीजिए — (क) ई कउन बड़ी बात आय। रोटी बनाय जानित है, दाल राँध लेइत है, साग-भाजी छँउक सकित है, अउर बाकी का रहा। (ख) हमारे

मालकिन तौ रात-दिन कितबियन माँ गड़ी रहती हैं। अब हमहूँ पढ़ै लागब तो घर-गिरिस्ती कउन देखी-सुनी। (ग) ऊ बिचरिअउ तौ रात-दिन काम माँ झुकी रहती हैं, अउर तुम पचै घूमती-फिरती हौ, चलौ तनिक हाथ बटाय लेउ। (घ) तब ऊ कुच्छौ करिहैं-धरिहैं ना—बस गली-गली गाउत-बजाउत फिरिहैं। (ङ) तुम पचै का का बताई — यहै पचास बरिस से संग रहित है। (च) हम कुकुरी बिलारी न होयँ, हमार मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नाहि त तुम्हार पचै की छाती पै होरहा भूँजब और राज करब, समुझे रहौ।

हल

(क) यह कौन बड़ी बात है। रोटी बनाना जानती हूँ, दाल पका लेती हूँ, साग-सब्जी का छौंक लगा सकती हूँ — और बाकी क्या रहा?

(ख) हमारी मालकिन तो रात-दिन किताबों में डूबी रहती हैं। अब हम भी पढ़ने लगें तो घर-गृहस्थी कौन देखेगा-सुनेगा?

(ग) वह बेचारी तो रात-दिन काम में झुकी रहती हैं, और तुम लोग घूमते-फिरते हो — चलो, जरा हाथ बँटा दो।

(घ) तब वे कुछ भी नहीं करेंगे-धरेंगे — बस गली-गली गाते-बजाते फिरेंगे।

(ङ) तुम लोगों को क्या बताएँ — यहाँ पचास वर्षों से साथ रह रहे हैं।

(च) हम कोई कुत्ते-बिल्ली नहीं हैं। हमारा मन हुआ तो किसी दूसरे के यहाँ चले जाएँगे, वरना तुम लोगों की छाती पर हरे अनाज भूनेंगे और राज करेंगे — समझे रहो।

उत्तर: सभी संवादों को अवधी/भोजपुरी लोकभाषा से खड़ी बोली में रूपांतरित किया गया — मूल आशय और भाव को बनाए रखते हुए।

प्रश्न 3

भक्तिन पाठ में 'पहली कन्या के दो संस्करण' जैसे प्रयोग लेखिका के खास भाषाई संस्कार की पहचान कराते हैं। नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं — आप वाक्य पढ़कर बताएँ कि इनमें किन तीन विशेष प्रकार की शब्दावली का प्रयोग हुआ है? • अरे! उससे सावधान रहना! वह नीचे से ऊपर तक वायरस से भरा हुआ है। जिस सिस्टम में जाता है उसे हैंग कर देता है। • घबरा मत! मेरी इनस्वींगर के सामने उसके सारे वायरस घुटने टेकेंगे। अगर ज्यादा फाउल मारा तो रेड कार्ड दिखा के हमेशा के लिए पवेलियन भेज दूँगा। • जानी टेंसन नई लेने का वो जिस स्कूल में पढ़ता है अपुन उसका हैडमास्टर है।

हल

इन वाक्यों में तीन विशेष प्रकार की शब्दावली का प्रयोग हुआ है:

1. कम्प्यूटर/प्रौद्योगिकी शब्दावली — वायरस, सिस्टम, हैंग। इन शब्दों का प्रयोग किसी दुर्जन व्यक्ति के नकारात्मक प्रभाव को व्यक्त करने के लिए किया गया है।

2. खेल (क्रिकेट) शब्दावली — इनस्वींगर, फाउल, रेड कार्ड, पवेलियन। इन्हें प्रतिद्वंद्वी को हराने और दंड देने के संदर्भ में उपयोग किया गया है।

3. बोलचाल/अनौपचारिक (स्लैंग) शब्दावली — 'जानी', 'टेंसन', 'अपुन', 'हैडमास्टर'। यह मुंबइया या युवा-बोली की शैली में है जो अनौपचारिक आत्मीयता और आत्मविश्वास व्यक्त करती है।

इन तीनों प्रकार की शब्दावलियाँ — प्रौद्योगिकी, खेल और बोलचाल — हिंदी की वर्तमान समृद्धि और उसकी ग्राह्यशक्ति का प्रमाण हैं। ये भाषा को जीवंत और संप्रेषणीय बनाती हैं।

उत्तर: तीन विशेष शब्दावलियाँ: (1) कम्प्यूटर/प्रौद्योगिकी शब्दावली (वायरस, सिस्टम, हैंग), (2) क्रिकेट शब्दावली (इनस्वींगर, फाउल, पवेलियन), (3) मुंबइया/युवा बोलचाल की शब्दावली (जानी, टेंसन, अपुन)।